18

<u>HUME</u> Western Philosophy.

<u>Scepticism</u> <u>BA II HONS.</u>

पाश्चात्य दर्शन के इतिहास का अवलोकन करने से पता चलता है कि लॉक के अनुभववाद का अन्त ह्यूम के संदेहवाद में हुआ। लॉक ने जन्मजात प्रत्ययों का खंडन करते हुये बताया कि हमारा मन सादे स्लेट या कोरे कागज की भाँति रहता है। उसमें किसी प्रकार कोई प्रत्यय नहीं रहता। ज्ञान या अनुभव से ही उसमें कोई प्रत्यय बनता है। अतः जितने भी प्रत्यय हैं वे अर्जित हैं। संवेदना एवं स्वसंवेदना ही ज्ञान के स्रोत या मार्ग ~~या [illegible]~~ हैं। इन्द्रियानुभव को ही ज्ञान का मापदण्ड मानते हुये लॉक ने द्रव्य आत्मा, परमात्मा आदि सभी को अनुभव का विषय माना है। ~~वह~~ उनके अनुसार प्रत्ययों के कारण रूप में जड़ द्रव्य की सत्ता सिद्ध है। लेकिन जड़ द्रव्य कैसा है यह पूछने पर लॉक का कहना है कि हम उसके बारे में नहीं जानते हैं। अर्थात् जड़ द्रव्य की सत्ता तो है पर वह कैसा

है वह नहीं जानते। बर्कले ने कहा कि अगर अनुभव ही ज्ञान का साधन है ~~प्रत्ययों को बोधक~~ जड़ द्रव्य का अनुभव नहीं होता। अतः जड़ द्रव्य नहीं। लेकिन बर्कले प्रत्यय को आत्मनिष्ठ मानकर आत्मा को स्वीकार किया है। अर्थात् आत्मा-परमात्मा की सत्ता है। यद्यपि कि बर्कले भी अनुभववादी थे।

ह्यूम घोर अनुभववादी है। उनके अनुसार यदि अनुभव ही ज्ञान का एकमात्र साधन है तो अनुभव न तो जड़ पदार्थों का होता है और न ही आत्म द्रव्य का। जिस तरह बर्कले ने जड़ पदार्थों का खंडन किया उसी प्रकार आत्मा, परमात्मा आदि का भी खंडन किया जा सकता है जबकि ज्ञान का एकमात्र स्रोत अनुभव है। इस तरह बर्कले

ह्यूम ने जड़ तत्व, आत्मा, परमात्मा आदि तत्वों को ज्ञान की सीमा के बाहर ~~माना है~~ माना। अर्थात् अनुभव के द्वारा किसी चीज का ज्ञान संभव नहीं। अतः इनके अनुभववाद का अन्तिम परिणाम संदेहवाद हो जाता है। इस प्रकार संदेहवाद अनुभववाद का स्वाभाविक परिणाम ~~हो जाता~~ है।

यदि इन्द्रियानुभव ही ज्ञान का एकमात्र साधन है तो सार्वभौम एवं अनिवार्य ज्ञान असंभव है। इसी कारण ह्यूम ने कार्य-कारण जैसे सर्वमान्य सिद्धांत को सम्भाव्य बतलाता है, अनिवार्य नहीं। यदि हमारा ज्ञान अनुभव तक ही सीमित है तो सामान्य कोरी कल्पना मात्र है। इनके अनुसार ज्ञान सिर्फ संस्कार एवं प्रत्यय (Impression and Ideas) का होता है। वह भी इस कारण कि वे अनुभव जन्य हैं। अतः अनुभव से

की आत्मा, परमात्मा, जड़ पदार्थ आदि
का ज्ञान संभव नहीं। इसी कारण सिद्धांत भी
संभाव्य ही है। इस आधार पर ही
ह्यूम संदेहवादी हैं।

अपने संदेहवाद को स्पष्ट करते हुए
ह्यूम कहते हैं कि सन्देहवाद वास्तव में
किसी को संतुष्ट नहीं कर सकता। ~~क~~
~~कि~~ यह सिद्धांत Pessimistic view
पैदा करता है। फिर यह सिद्धांत अपने
आप में आत्मघातक सिद्धांत है।

लेकिन ह्यूम का संदेहवाद इस
दृष्टि से अच्छा ही माना जाएगा कि
वे सिर्फ अनुभव को ज्ञान का साधन
मान कर संदेहवाद पर आते हैं। अगर
ज्ञान का कोई दूसरा साधन मिल
जाए तो हो सकता है, जिन पदार्थों
का खंडन ह्यूम ने किया, वह
फिर स्वीकार कर ली जाए।

ह्यूम ने सिर्फ इतना ही कहा है कि यदि ज्ञान का एकमात्र साधन अनुभव है तो अनुभव से न तो जड़पदार्थों का ज्ञान हो सकता है और न ही चेतन तत्त्वों का। लेकिन अगर कोई दूसरा साधन हमें मिल जाए तो इन पदार्थों का निषेध कोई जरूरी नहीं। अनुभव को इन्द्रियगत करके ही जड़ पदार्थों एवं चेतन तत्त्वों का खंडन किया गया है। व्यवहारिक जगत के लिए जड़ पदार्थ एवं चेतन पदार्थ भी सत्य हैं। विश्वास एवं आस्था के लिए आत्मा परमात्मा एवं जड़ पदार्थों का पूर्णतः खंडन नहीं किया जा सकता है। सिर्फ अनुभवात्मक विषयों में मानव ज्ञान सक्षम है। अनुभव से परे विषयों को तर्क या प्रमाण से नहीं जान सकते। इस प्रकार मानव ज्ञान की सीमा निश्चित है। लेकिन

फिर भी ह्यूम आत्मा एवं विश्वास का विरोध नहीं करते। हमारा दैनिक जीवन तो विश्वास पर ही चलता है। हम विश्वास पर आधारित मान्यताओं को पूर्णतः खण्डन नहीं करते परन्तु साथ ही उनका बौद्धिक समर्थन भी नहीं किया जा सकता है। ह्यूम अपने संदेहवाद द्वारा परम्परागत अन्धविश्वास से समाज को मुक्त करना चाहते हैं। अतः ह्यूम के संदेहवाद का अर्थ है - अनुभवातीत विषय मानव बुद्धि के परे हैं, इनकी प्रामाणिकता संदिग्ध है।

अतः समीक्षक के रूप में हैं कि ह्यूम कुछ दूर तक अवश्य संदेहवादी हैं परन्तु गणित प्राकृतिक विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान की यथार्थता को स्वीकार करते हैं। अतः इन्हें पूर्णतः संदेहवादी भी नहीं कह सकते।